#९०. ज्ञानावस्था का क्रम

१०-०७-१३

ज्ञानावस्था समझदारी का प्रमाण है | समझदारी, सहअस्तित्व दर्शन ज्ञान, जीवन ज्ञान, मानवीयतापूर्ण आचरण ज्ञान का संयुक्त स्वरूप है | इसमें कोई भी कमी रहने से ज्ञान नहीं हुआ | इसका प्रमाण ही अथवा समझने का प्रमाण ही समाधान, समृद्धि, अभय, सहअस्तित्व है | प्रमाण रूप में जीना ही समझने का प्रमाण है | इस ढंग से समझदारी क्रम में अनुभव प्रमाणित होता है | इसको भले प्रकार से हमने समझा है | हमारे साथी लोग भी समझे हैं | सहयोगी लोग भी समझे हैं | इस ढंग से समझने का क्रम चालू हुआ है | २००० के दूसरे दशक में इसका, समझदारी का क्रम ठीक लग रहा है | लोगों में स्वीकार हो रहा है | इस क्रम में लोकव्यापीकरण होने की सम्भावना है | परिवार में समाधान, समृद्धि, अभय, सह-अस्तित्व प्रमाणित होना ही अखण्डता, सार्वभौमता का आधार है | अथवा दूसरा भाषा में पृष्ठभूमि है | दूसरा विधि से विकसित चेतना का प्रमाण है | यही समाधान, समृद्धि, अभय, सह-अस्तित्व है | हर परिवार समाधान, समृद्धिपूर्वक जीना; फलस्वरूप अखण्डता, सार्वभौमता का प्रमाणित होना है | अखण्डता, सार्वभौमता प्रमाणित होने के क्रम में धरती संतुलित रहना, धरती पर चारों अवस्था संतुलित रहना सम्भव है | इसी आशय के आधार पर विकल्प का प्रस्तुति है |

विकल्प में ही चारों अवस्थाओं में संतुलन का प्रस्ताव है, जो मध्यस्थ दर्शन सह-अस्तित्ववाद है | इस पद्धति से हम मानव में सुख, शांति, संतोष, आनंदपूर्वक जीना बनता है | सुखपूर्वकसुखपूर्वक जीना समाधान का फल है | समाधान=सुख, सुख=मानव धर्म | इसी आधार पर मानव का धर्म एक होना प्रमाणित होता है | मानव धर्म प्रमाणित होना ही सार्वभौमता है | सार्वभौमता विधि से ही चारों अवस्था में संतुलन होता है | चारों अवस्था अपने-अपने आचरण रूप में जीना ही संतुलन है | मनुष्येतर तीनों अवस्था में संतुलन है ही, मानव में संतुलन बनना शेष है | इसी सफलता के आशय में विकल्प प्रस्ताव रूप में प्रस्तुत है | इसे भले प्रकार से शोधा है | जिया जाने के लिये यह प्रस्ताव ठीक लगता है | अभी जो अध्ययन कर रहे हैं उन्हें भी अच्छा लग रहा है | इसी क्रम में लोकव्यापीकरण होना सम्भव सा लगता है | इसका प्रमाण केवल मानव जात जीना ही है | बाकी तीनों अवस्था की वस्तु जीवावस्था, प्राणावस्था, पदार्थावस्था में आचरण सह-अस्तित्व के क्रम से स्पष्ट है | इसे अध्ययन कर देखा है | हर व्यक्ति अध्ययन कर सकते हैं, शोध कर सकते हैं | दूसरा विधि से हर व्यक्ति समझदारी को प्रमाणित करना चाहता है | शिक्षा क्रम में समझदारी प्रमाणित नहीं हुई | मानव अपने मनमानी विधि से ही समुदाय चेतना में जिया है | समुदाय समाज नहीं होता है | समाज समुदाय नहीं होता है | इसे भले प्रकार से शोधा है |

इसको समझने में कोई तकलीफ नहीं है, कोई अड़चन नहीं है | समझने में राजनैतिक अड़चन, धर्मनैतिक अड़चननहीं होता है | समुदाय धर्म को मानते समय में अधूरापन बना ही रहता है | इसीलिये विकल्प को रखा है | विकल्प विधि से मानव का आचरण प्रमाण के रूप में जागृत चेतना होता है | यही ज्ञानावस्था की उपलब्धि है | यह अभी तक आदर्शवादी विधि से कोई समुदाय प्रमाणित नहीं हुआ | आशय प्रकारांतर से सभी समुदायों में होना पाया जाता है | आशय रूप में होना प्रमाण नहीं है | आचरण रूप में होना ही प्रमाण है | प्रमाण का आशय करीब-करीब सभी समुदायों में है ही | सभी समुदायवादी आदमी अज्ञानी, ज्ञानी, विज्ञानी के रूप में गण्य है | इन चारों प्रकार से मान्यता प्राप्त मानव जात शुभ को चाहता है | मनमानी विधि से मानव परिवार सुख को चाहा है, जिया है | उसमें न्याय को खोजता रहा | परिवार सीमा में न्याय

नहीं हुआ, न समाधान हुआ, न सत्य हुआ | न्याय होना ही बाकी दोनों पक्ष का आधार है | विकसित चेतना ही अनुभव प्रमाण, विचार प्रमाण, व्यवहार प्रमाण के रूप में प्रमाणित होता है | न्याय का आधार इतना ही है | बीसवीं शताब्दी का दूसरा दशक तक मानव इसमें पारंगत होना अपेक्षित है ही | अभी आंशिक संख्यात्मक मानव में विकल्प का स्वीकृति हो चुकी है | अभी तक जो स्वीकृतियां हुई हैं, सर्वाधिक रूप में प्रेरक होने का पक्ष में है | प्रमाणित होने के पक्ष में नहीं है | प्रमाणित होने के पक्ष का मतलब स्वयं अनुभव करने का पक्ष | प्रेरक होने का पक्ष में पढने के बाद बोलने में, परोपकार करने में चले जाते हैं | उसका भी संसार को उपकार है | इसमें समझ पीछे रह जाता है |

प्रमाणित होने के पश्चात ही परम्परा बनता है | परम्परा विधि से ही जागृति प्रमाणित होती है, अन्यथा होता ही नहीं | जब तक प्रमाणित न हो तब तक अखण्डता, सार्वभौमता प्रमाणित नहीं होता है | अखण्डता, सार्वभौमता ही जागृति सहज परम्परा का आधार है | इसलिये प्रमाण की आवश्यकता आ गयी है | तीसरे विधि से यह भी आवश्यकता महसूस होता है कि अभी तक मानव जैसा जिया उसके अनुसार भ्रम और अपराध वैध हो गया | सभी समुदायिक संविधान में अपना चुके हैं | भ्रम लाभोन्माद, कामोन्माद, भोगोन्माद के रूप में होना आंकलित हुआ है |

अपराध संघर्ष और युद्ध के रूप में प्रमाणित होना देखा गया है | यह पांचों भाग संविधान स्वीकृत है सभी देशों में | १०० देशों से अधिक देश इस धरती पर गणना में आ चुका है | इसे वैध होना ही न्याय माना जा रहा है | फैसला को न्याय मानते हैं क्योंकि फैसला के पीछे बारूदका भय रहता है अथवा बंदूक का भय रहता है | ये दोनों आधार मानव चेतना के विपरीत हैं | मानव चेतना में जीने में समाधान, समृद्धि, अभय, सह-अस्तित्व प्रमाणित होता है | सह-अस्तित्व का मतलब ही है चारों अवस्था में संतुलन | यही मानव परम्परा में न्याय कहलाता है, मानव में संतुलन | इस क्रम में मानव जागृति क्रम में ही विकसित चेतना अथवा जागृत चेतना अथवा समाधान, समृद्धि, अभय, सह-अस्तित्व को प्रमाणित करता है, दूसरा कोई विधि नहीं है | अभी तक विकल्प का प्रकट न होना ही मनमानी करने का आधार रहा है | शासन का अपेक्षा जिन सीमित जन जातियों में रहा है, वही शासन करता रहा है | जन शासन विधि से अनाचार, अत्याचार, भ्रष्टाचार बढ़ गया | मुक्ति कैसा हो? इसका चर्चा राजनैतिक विधि से चल रहा है | यह शुभ घटना है |

इसी क्रम में ग्लोबल हार्मनी जो संस्था बन चुकी है, संस्था का आशय बन चुका है | इसी प्रकार है ग्लोबल सिटिजन | यही दो संस्थाएं विश्वव्यापी संतुलन, आचरण को चाहा है | इसके पहले से ही अंतर्राष्ट्रीय संस्था है। सार्वभौम रूप में न्याय कैसा हो?, शिक्षा कैसा हो?, इस बात को सोचा है | दिशा नहीं मिला | विकल्प में दिशा मिलता है | इसे यह तीनों संस्थाएं अपनाना ही संसार का शुभ है अर्थात मानव संसार का शुभ है | चारों अवस्था का शुभ है, चारों अवस्था में संतुलन | किस प्रकार का अवस्था ज्यादा रहना है उसी को अपनाता है | फलस्वरूप चारों अवस्था संतुलित होना प्रमाणित होता है | यह कार्य करने वाला आदमी जात ही है | तीन प्रकार से आदमी गण्य है | तीनों प्रकार के आदमी को विकसित चेतना में पारंगत होना आवश्यक हो गया है | इस क्रम में मानव अपना वैचारिक प्रमाण नियम, नियंत्रण, संतुलन, न्याय, धर्म, सत्य को प्रमाणित करता है | यह समाधान, समृद्धि, अभय, सह-अस्तित्व सम्मत रहता है | इस विधि से मानव अपनी सार्थकता को प्रमाणित कर सकता है |

जय हो, मंगल हो, कल्याण हो |

- **ए. नागराज | प्रणेता एवं लेखक | मध्यस्थ दर्शन (सह-अस्तित्ववाद) | दिव्य पथ संस्थान(भजनाश्रम) | अमरकंटक | जिला-अनूपपुर(म. प्र.)**